कीर्ति रमण

लेखिका—

सिद्धि श्री १०८ श्री महारानी श्री लक्ष्मी जी कृपा पात्राधिकारिणी श्रीमती श्रीपरिहारिन माँ जी सा० जू देई देवी, रीवाँ राज।

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

कीर्तिरमण

श्रीमते रामानुजायनमः

अर्पण

॥ दोहा ॥

अरपण प्रभु गुन गान यह। चरण कृष्ण भगवान॥
कीर्तिरमण स्वीकार करि। कीर्तिदान पद ध्यान॥
छेम चरण भगवान के। सर्व सुकृत फल दान॥
राधा कृष्ण युगुल सुधा। कीर्ति तरणि गुन गान॥

॥ सवैया ॥

मम इष्ट कृष्ण सुखदेव प्रभू। तिनके श्रीचर्ण प्रणाम करूँ॥१॥
भवतारन भाव अधीन सदा। करुणा कि वहीं फिर चाहकरूँ॥२॥
युग कष्ट हरे जनहेत हरे। उन आर्त बिनासन से भगरूँ॥३॥
स्वीकार विभोपद कीर्तिरमण। गुनगान अर्पि संसार तरूँ॥४॥

❁ ❁ ❁

लेखिका—
कीर्ति देवी
रीवा राज

मुकाम प्रयाग
रींवा कोठी

भूमिका

दोहा

सदा चरण आश्रित रहे, हित आपन पहिचान।
चेतन जीवन कर करें, कीर्ति रमण कल्याण॥

त्रिभुवन के स्वामी भगवान श्री राधाकृष्ण के कमलवत् पदों में मानव सदा से ही रत रहता आया है। उसे जो कुछ भी प्राप्ति हुई है, भगवत सेवा से ही हुई है। यश, मान, मर्यादा, सम्पदा, वैभव, धन धान्य, रूप, सन्तान, सन्तोष, शान्ति भी ऐसी लौकिक या पारलौकिक वस्तु नहीं है जो एक भगवत सेवक को न प्राप्त हो सके। देवता, रिषि, मुनि, नृप आदि बड़े मानी व्यक्तियों को भगवान के पदार विन्द का ही सेवन कर अभीष्ट प्राप्ति में सफलता मिलती है। देवताओं में परम श्रेष्ठ ब्रह्मा भगवान के उस पद की सेवा में रहते हैं जिससे निकली परम पावनी गंगा को भगवान शंकर सदा अपनी जटा में धारण करते हैं। जब ऐसे महान देवता भगवान के परम पद के पुजारी बने रहने में अपने को गौरवान्वित समझते हैं, तब जन साधारण का, उस पद से अनुराग न रखना, उसका दुर्भाग्य ही समझा जायगा।

बहुतों की धारणा है भगवत-सेवा भगवत-यश कीर्तन एक निरस प्रकरण है ऐसे ही लोग भगवान की सेवा से दूर भागते

हैं लेकिन सचमुच बात कुछ और ही है। भगवत सेवा जैसी प्रेम और आनन्द दायिनी वस्तु संसार में दूसरी कोई है नहीं। इस विषय में सब धर्म और सब जाति, सब देश, और समुदाय में मतैक्य है कि मानव मात्र का एकमात्र कल्याणकारी मार्ग भगवत सेवा है। तनिक उस समय की कल्पना कीजिये जब आप संसार भर के माया, मोह बंधन, राग विराग, द्वेष और चिन्ता को त्याग भगवान के पद में ध्यान लगा कर बैठ जाते हैं। क्या आप उस क्षण की तुलना में जीवन का कोई भी क्षण रख सकते हैं ? भगवत सेवा सभी सेवाओं का मूल स्थान है। जो भगवत सेवी है, वही देश सेवी, समाज सेवी कुटुम्ब सेवी और परिवार सेवी हो सकता है। जिसे परम पिता के पद से प्रीति नहीं है, फिर वह मनुष्य नहीं है पत्थर है। वह किसी के काम नहीं आ सकता। अस्तु हमारी मानव मात्र से प्रार्थना है कि वह मनुष्य जीवन को सफल बनाने के विचार से भगवत सेवा का व्रत ले। इसी सेवा व्रत की पूर्ति के लिये मैंने "कीर्ति-रमण" की रचना की है, यदि इसे पढ़ कर पाठकों में भगवत सेवा की किंचित मात्र भी भावना जगी तो मैं अपने को धन्य समझूंगी—

कीर्तिदेवी

श्रीगुरुदेवेनमः ॐ श्रीहरिःशरणम्

दोहा

प्रणव गुरू पद बार बहु, हित उद्धार विचार ।
भवा टवी आवागवन, मुक्त करत नहिं वार ॥

सोरठा

पूज्यगुरू पद आस, कीर्ति कीन गुनगान प्रभु ।
मेटन भव की त्रास, दीनानाथ चरित्र शुभ ॥

अस्तुति ॥ छन्द ॥

सविनै प्रणाम मुकुन्द मोहन श्यामपद भवतार के ।
गोबिंद गिरिधर आस जन कृत हेत युग अवतार के ॥१॥
माधव रमापति राम सीता नरहरी सुख सार के ।
वामन विराट वराह मत्स्म व कच्छ अजित मुरार के ॥२॥
जगदीश नारायण हरी नटवर सत्य हित कार के ।
दर्पण नृपन पद पर्शुराम अनंत शिर भू धार के ॥३॥
श्रीविष्णु लक्ष्मी अखिलपति करुणामयी सरकार के ।
ध्रुव अचल पदवी दानकारी हरन द्वन्दक भार के ॥४॥
शांति मूर्ते बौध कल्की रूप अमित सुधार के ।
सर्वेश पूरण ब्रह्म मूल अनूप त्रिगुन प्रसार के ॥५॥

युग युग अनिष्ट निवारि राधा कृष्ण सत विस्तार के ॥
कलि कीर्ति दीनानाथ राखन हार दीनन वार के ॥६॥

॥ कवित्त ॥

गोलोकवासी कन्त राधा रमन बाधा हर ।
जै पदारबिन्द अति राखी मुद जन के ॥१॥
त्रिगुण रचाय विश्व लीला धर आप रमे ।
जीवनाधार सरब व्यापी सत प्रन के ॥२॥
युगन धरा उधार कीन को कृपाल आन ।
दीनानाथ के सम हेत करुण वनके ॥३॥
कीर्ति प्रार्थना धारि श्रवण हरि कष्ट हरो ।
पायोना कलेश कोऊ गुन गान मन के ॥४॥

॥ कवित्त ॥

भीतिहर राधा कृष्ण नाम जाप इष्ट दृढ़ ।
कंज पद के समान सार नहीं आन है ॥१॥
अखिल बिहारी सरबस्व मूल श्री मुकुंद ।
विधि के विधाता के शरण कल्यान है ॥२॥
तन मन अर्पि ह्वै अनन्य मुग्ध रूप छके ।
गुनगान करन त्रै सेवा सुख दान है ॥३॥
कीरति के दीनानाथ बार बार त्रास मेटि ।
वसुधा उधार जनदेत निरवान है ॥४॥

॥ दोहा ॥

दीनानाथ दयाल मम, इष्ट चरण धरि ध्यान।
कीर्ति रमण गुनगान रचि, चाहत जग कल्यान॥
प्रारंभन कौतुक कथा, होत कृष्ण भगवान।
वक्ता श्रोता पाठकिन, अवशि होय कल्यान॥

॥ कथा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

धरा दुखी विधि ढिग गई। आरत करत पुकार॥
ब्रह्मा विष्णु समीप गे। सँग सुर बृन्द अपार॥
विष्णु प्रभू हँसि विधि सहित। गालोकहिं पग • धार॥
दीनानाथ जहाँ बसे। कृष्ण चंद्र जगतार॥
महिमा अति गोलोक को। कापै बरनी जाय॥
जहाँ वसे राधारमन। भेद वेद नहिं पाय॥
श्री विराट फोरयो चरण। स्वर्ग सात सुर काज॥
जब नाप्यो ब्रह्माण्ड हरि। मार्ग सोई कृत काज॥
वही फूट ब्रह्माण्ड से। लै सुर बृन्द समाज॥
श्री गोलोक रमेश गे। जहाँ कृष्ण महराज॥
द्वार पाल चंद्रानना। विष्णु गमन कृत गाय॥
पूछि कौन ब्रह्माण्ड के। विष्णु कहा मुस्क्याय॥
पृश्नि गर्भ ब्रह्माण्ड युग। के हैं वासी सर्व॥
लै आज्ञा उत्तर दियो। गमनहु प्रभु ढिग सर्व॥

कृष्ण विष्णु स्वैरूप द्वै। विधिसुर छके अनाय ॥
सुघर महा गोलोक छवि। वेद भनत सकुचाय ॥
जा गोलोक महान की। वंदन करत मुरार ॥
ताकी उपमा ही नहीं। रूप कृष्ण आगार ॥
आज्ञा लै गमने निकट। विष्णु सर्व सुर साथ ॥
चकित थकित विधियुत सबै। लखि प्रिय गोपुर नाथ ॥
शेष गोद गोलोक शुभ। कालिंदीसु तरंग ॥
महामणिन आगार अति। प्रभा देखि सुर दंग ॥
सुरभी मनहरनी महा। यूथ गोप सुचि ठाट ॥
प्रति थल शोभा अति तहाँ। वाट घाट चौहाट ॥
यूथ यूथ गोपी सुघर। राधा कृष्ण विहार ॥
थल थल कुंज निकुंज वन। गोवर्धन छबिधार ॥
जलज सहस दल ज्योतिमै। फिर खट दस दल कंज ॥
तापर कंज सु अष्ट दल। कौस्तुभ मणि मन रंज ॥
सो मणि सिंहासन प्रभू। सिरी कृष्ण सुख राज ॥
राधायुत कौतुक सदन। सोहि रहे शिर ताज ॥
जैति जैति जै जयति जै। भनत सर्व हर्षाय।
पाहि पाहि अशरण शरण। दृगन प्रेम जल छाय ॥

॥ छन्द ॥

विधि सुर सर्व प्रमुदित दर्श लहि सुघर राधाकंत के ॥
संयुत सकल दर्बार विधिवत वेद पर भगवंत के ॥१॥

अँग अंग मन हर चरण तिरछे प्राण जीवन संत के ॥
मुरली मुकुट कुंडल चंद्रिका माल हार लसंत के ॥२॥
दृग कंज रतनारे अधर अरुणार भव दुख हंत के ॥
मुसक्यान माया विस्व व्यापिनि ज्योति सूर्य सुदंत के ॥३॥
दुर्लभ महा आनंद श्रीगोलोक नाथ अनंत के ॥
प्रणमामि वारम्वार कीर्ति प्रधान पद सुख वंत के ॥४॥

॥ दोहा ॥

अस्तुतिकरि विधि असलखे। सर्व स्वयम् अवतार ॥
आय समाने कृष्ण वपु। लीला अपरं पार ॥
सर्व देव अस्तुति बहुरि। कीन अनेक प्रकार ॥
मधुर गिरा श्री कृष्णजी। बोले करुणा गार ॥
इच्छा करहु प्रकाश सुर। आये जाके हेत ॥
करब मनोरथ पूर सब। यही हमारा नेत ॥
विधि बोले हे नाथ जी। धरा दुखी लहि पाप ॥
त्राहि त्राहि सो शरण है। कष्ट मेटिये आप ॥

॥ छंद ॥

सुनि वचन विधि मुसक्याय मोहन सुरन आदेशन लगे ॥
है सत्य ममनन की यही हे विधि सुनो भाषन लगे ॥१॥
यदुवंशलै अवतार सुर पत्निन सहित सत हित पगे ॥
शिव अंश अंशिन सर्व हूँ यह नाट्य अद्भुत कृत जगे ॥२॥

छम जन्म यदुकुल में अवसि लै कष्ट हनि सत कृत रँगे ॥
है वेद वाक्य हमार मुख द्विज धेनु तन सुर अँग अंगे ॥३॥
साधू प्राण युग युग धर्म रक्षण कीर्ति हित कर सगे ॥
सत्यार्थ जन्म हमार इच्छित लहहु गे सब दुख भगे ॥४॥

॥ सवैया ॥

मुनिबातपियाकि वियोगविलोकि। हृदय उमडान कपी सुकुमारी ॥
जिनके बिन दर्शन सार कछू। सरबस्त प्रभू त्रैलोक्य विहारी ॥
तिन सेवा सरीर मनौ धन प्रान। जिये फिर काह सुधा तजिझारी ॥
मुख चंद्र मनोहर कृष्ण पती। दृगकीर्ति चकोर पदै चितधारी ॥

॥ छंद ॥

प्रियतम वचन सुनि राधिके प्रिय मुर्छि व्याकुल है गई ॥
विन प्राण जीवन के दर्शपल कल नहीं दुख छै गई ॥१॥
यदुकुल जन्म मम नाथ का गोलोक कौन बसै दई ॥
कन्त विन धृक देह जीवन सौख्य शोभा सुघरई ॥२॥
अकुलातमन अति भ्रमत धीरज बँधत नहि तन सुधि गई ॥
झरत वियोग दवारि मंजुल लता सम मुरझा गई ॥३॥
भनत असमुख चेतकरि दुक ढारि दृग जल विकलई ॥
कीर्ति दीनानाथ विनतजि प्राण गति लहिहो नई ॥४॥

॥ दोहा ॥

दीनानाथ कृपाल तब। संबोधन असकीन ॥
धैर्य धार प्रिय राधिके। जन्म संग युगलीन ॥

वार यहू तव संग मे । होई जन्म हमार ॥
प्रकृति पुरुष तुम हम दोऊ । शोचहु ना सुकुमार ॥
हाँथ जोरि विनयो प्रिया । जहाँ कलिंदी नाहि ॥
गोवर्धन बृंदा विपिन । नहीं तहाँ हम जाहि ॥
वृन्दावन सामान युत । गोवर्धन सुख काज ॥
बृजचौरासी कोस महि । कालिंदी हित काज ॥
दीनपठाय सहर्ष से । वृन्दा विपिन विहार ॥
यमुना गोवर्धन सहित । कृष्ण प्रिया हित धार ॥
बृज चौरासी कोस भू । गवन राधिका जान ॥
प्रमुदित पिय पद परशि हँसी । जन्म सेव कल्यान ॥

॥ सवैया ॥

सुखचन्द मनोहर वैन कहे प्रिय राधि के तो सँग रासरमाऊ ॥१॥
वृषभान सुचंद्र पिता तुम्हरे । जननी सुकलावति आसपुराऊ ॥२॥
तब जन्म सोहावन राधिका नाम । बढ़ाय सनेह सुगोपी रिझाऊ ॥३॥
बृज कुंज कछार कलिंदी बनै । मिलि कीर्ति प्रमोद नवीन बढ़ाऊ ॥४॥

॥ दोहा ॥

दीनानाथ दयाल के । बचन सुधा सुनि कान ॥
बृन्दावनबृज अमितसुख । मिलि पद सेवा मान ॥
हर्षिपुलकि पियतन चितै । गद गद गर उँमगान ॥
श्री राधा बाधा हरन । जन्म जगत कल्यान ॥
फिर श्री दीनानाथजी । उपनंदहि समझाय ॥
नंद आदि सब जन्म लै । श्रीदामादिक जाय ॥

अंशु अस्तोक व अर्जुनौ। सखा प्रिया मम जान॥
सोजन्मै नव नंद घर। हितकर आज्ञा मान॥
वरुथप तेजस्वी ऋषभ। देव प्रस्थ सुविशाल॥
ह्वै वृषभाननके यहाँ। जन्मै आज्ञा पाल॥
मै होइहों वसुदेव सुत। जननि देवकी मान॥
शेषौ कला हमार है। रोहिणि मात सुजान॥

॥ सवैया ॥

जन्मी कमला गृह भीष्मक के। शुभ नाम रुक्मिणी रूप निकाई॥
त्योंही शिवा जाम्वती तुलसी। सत्या वसुधा सति भाम सोहाई॥
पत्नी मख दक्षिणा लक्ष्मणा है। विरजा कालिन्दी नाम कहाई॥
भद्रा ह्री लज्जा अघहारी। गंगे मित्र विंदा कीर्ति बनाई॥

॥ कवित्त ॥

अवतार कामदेव रुक्मिणी सुजान पुत्र।
प्रद्युमन नाम वीर होई महा बाँकुरा ॥१॥
ता सुत विरंचि अनिरुद्ध तूही ह्वैहो जाय।
विक्रम अतुल सौख्य शोभा युत चातुरा ॥२॥
वसुद्रोण नंद पत्नी धरा श्री यशोदा होय।
गोकुल सुमंडल गोसइया ह्वै ठाकुरा ॥३॥
कीर्ति दीनानाथ आदेश देत सुर समेत।
जन्म यदुवंश शरण दास हेत आतुरा ॥४॥

॥ दोहा ॥

पूछत विधि हे नाथजी । पदवी देहु बताय ।
नंद और बृषभानयुत । उपनंदहुँ कृत गाय ॥
करुणानिधि बोले विहँसि । लच्चण देत बताय ।
धेनु कृत्ति अरु वृत्ति के । नाम गोपाल कहाय ॥
गाय गोप नौलच्च के । पालक नंद कहाय ।
लच्च पंच गऊ गोप के । उपनंदहिं पद पाय ॥
गाय गोप दस लच्च के । पालक सो बृष भान ।
धेनु कड़ोर सुपाल जो । नंद राज हैं जान ॥
लच्चे पचास सुगोप युत । पालक वर वृषभान ।
सो सुचंद्र अरु द्रोण द्वै । हैं बृज में परधान ॥
गोपराज सोई अहैं । यह प्रकार सब जान ।
हे विरंचि बृजनाम्य यह । महा मुक्ति की खान ॥
सत गोपिन के यूथ हूँ । ह्वै हैं बृज मह जाय ।
सब किशोर शोभामई । छवि उत्तम दरसाय ॥
विनैयुक्त फिर विधि कहा । यूथ गोपिकन केर ।
देहु सर्व समुझाय प्रभु । जिन मतिं श्रीपद हेर ॥

॥ छन्द ॥

अर्बुद एक दस कोड़ का दस अर्बुदों का यूथ है ।
गोलोकवासिनि हैं कोई कोइ द्वार पाल अनूप है ॥१॥
वृन्दाविपिन कोइ पालिकागिरि वासिनी हूँ जूत है ।
कोई निकुंज सुर-चनवारी कुंजवासिनि नूत है ॥२॥

इच्छा हमारी है विरंचि वही मया मजबूत है।
वृज होय यह सब्र कीर्तियुत प्रभु कहत अद्‌भुत यूथ है ॥३॥

॥ कवित्त ॥

विधि यही यूथ एक यमुना सोहावन को।
दूजो जाह्नवी सुयूथ तीजा पुनि रमा को ॥१॥
यूथ मधु माधवी त्यों विरजा व ललिता को।
और हूँ विशाखा माया यूथ है सुखमा को ॥२॥
है यूथ अष्ट और सोला वृज जन्म सखिन।
बत्तिस अनूप यूथ महा शुभ प्रभा को ॥३॥
जन्म वृज लैहैं विरंचि कहत कीर्ति नाथ।
है नहीं बखान अत्ति विधि मम मया को ॥४॥

॥ दोहा ॥

श्रुति रूपी गोपी सबै। मुनि मिथिलापुर नार।
वासिनि कोशल देश की। अवधहुँ की छविधार ॥
मख सीता गोपी भई। सुता पुलींदी आदि।
अरु जिन वर प्रथमै दियो। युग युग हित कृत वादि ॥
जन्म युगन युग लीन हम। दीन तबै वरदान।
कृष्ण जन्म द्वापर गते। होई तब कल्यान ॥

॥ छन्द त्रिभंगी ॥

विधि कह उमँगाई, चरित सोहाई, लीला छाई—मन हारी ॥१॥
कहिये समझाई, त्रिभुवनराई, उर सुख छाई, यश भारी ॥२॥

बृज यह सब जाई, किमि उपजाई, सुकृत छाई जग भारी ॥३॥
कह पुन्य बड़ाई, तप मुद पाई, सुख अधिकाई, भय हारी ॥४॥
नहि ज्ञानिहु पाई, पद अधिकाई, शरण कमाई, गति सारी ॥५॥
पुरुषोत्तम गाई, वेद बड़ाई, बृज निवसाई भ्रम टारी ॥६॥
अति भाग्य निकाई, किमि कहि जाई, कीरति पाई गिरधारी ॥७॥

॥ दोहा ॥

बोले करुणा ऐन तब । श्वेत दीप कर हाल ।
भूमा परम पुरुष प्रथम । अस्तुति श्रुति यन पाल ॥

॥ छन्द झूलना ॥

अस्तुति सुरन सुनि सहसपद भगवान
बोले प्रसन्न ह्वै मनहरन वानी ॥ १ ॥
दुर्लभ नहीं है जिनपै प्रसन्न हम
वर माँग देइहौं कहत हर्षि बानी ॥ २ ॥
बिनै श्रुति करै मन परे वचन स्वामी
अकथ प्रभु रावरे की विचित्र सब कहानी ॥३॥
आवत न चिन्तन में ज्ञानी विद्वान कहत
आनन्द मात्र वर्णि थाकि सुख मानी ॥४॥
सोई रूप कृपागार दीजै दरशाय अब
होउ जो प्रसन्न प्रभु सत्य मुक्ति खानी ॥५॥
कीर्ति दीना नाथ महिमा कोई न जान सके
इच्छित वरदान देहु शरणागत जानी ॥६॥

॥ दोहा ॥

श्रुति अस्तुति श्रवणन धरे। प्रकृति परे जो लोक।
दीन देखाय कृपाल प्रभु। आनँद धाम विशोक ॥

छन्द तोमर

अनुभव अनंदहि मान। अव्यय व अक्षर जान ॥
दरसाय सोई दीन। वृन्दा बिपिन युत तीन ॥
बन कल्प वृक्षन केर। अति कुंज ललित घनेर।
ऋतु सर्व जहँ सुखदाय। पर्वत गोवर्धन भाय ॥
झरना अनेकन खोह। रत्नन ढेर अति सोह ॥
पक्षी अमित सुख पाँति। गिरि राज छबि बहु भाँति ॥
निर्मल सलिल गम्भीर। सीढी रत्नमणि हीर ॥
सरितन सर्व शिर ताज। रविसुता शोभा भ्राज ॥
रसरास अति सरसाय। गण गोपिका दरसाय ॥
मूरति किशोर अनूप। श्रीकृष्ण त्रिभुवन भूप ॥

॥ दोहा ॥

अद्भुत दर्शन दै कहा। उन देवन भगवान।
इच्छित वर माँगहु मुदित। हूँ प्रसन्न यह मान ॥
श्रुति सप्रेम विनती करी। कोटि मदन बलिहार।
हे मोहन कंदर्प मन। दान रमन रति सार ॥
मन्द मन्द मुसक्याय तव। दीन प्रभू आदेश।
दीन मनोबाँछित तुम्हें। कहत नाथ सर्वेश।
अति दुर्लभ वर है सुनो। दुतिय सृष्टि विधि माहि ॥

दोहा

सारस्वतव्यय कल्प जत्र, गोपी जन्म सोहाहि ॥
भातखंड मथुरा सुखद, मंडल रास विहार ॥
तहँ अति प्रिय तव होंउगो, लहिहो रतिअधिकार ॥
हे विधि प्रथमहि कल्पवर, श्रुतियाँ गोपी होय ॥
औरहुँ गोपिन जन्मविधि, कहूँ सर्व हित जोय ॥

छंद मालिनी

राम शुभ जन्म गाई । युग त्रेता कहाई ॥
दशरथ नृपराई । पुत्र तिन सुखदाई ॥१॥
राम युत चार भाई । वंश आनँद छाई ॥
राक्षसन नसाई । लीन उत्तम बड़ाई ॥२॥
मिथिलापुर जाई । धनु भंजि जय छाई ॥
राम छवि भाई । नारि मोहि उमगाई ॥३॥
हेत विनै पति गाई । नैन राजिव सोहाई ॥
राम टुक मुसक्याई । दीन वांच्छा पुराई ॥४॥
अन्तद्वापर सोहाई । हर्ष इच्छित को पाई ॥
वाणी अति राम भाई । कीन व्रत नेम लाई ॥५॥
बृज विधि सोउ जाई । गोपिका है महाई ॥
कीर्ति सुगति बनाई । ध्यान पद दृढ़लाई ॥६॥

कवित्त

मिथिला से सीता व्याहि गमने अवध राम ॥
कौशल पुर नारी बिलोकि प्रभु शोभा को ॥१॥

मुग्ध ह्वैगई सप्रेम कीन विनै रति दान ॥
ह्वैहै सोउ गोपी वर पाय मन मोदा को ॥२॥
देखि सीता संग नारी सरबहीं अयोध्या की ॥
विधियाहि पाय वरदान मन लोभा को ॥३॥
दण्डक वन योगी आदि माहिं सोई वर लै ॥
ह्वै गोपी चरण कीर्ति लीन सुत यशोदा को ॥४॥

दोहा

दण्डक वनवासिन मुनिन। कहा राम शिर ताज ॥
लखन सदृस जो चाहते। देत वांछित आज ॥
सीता की समता करी। हूँ पत्नी व्रत एक ॥
द्वापर अन्त मनोर्थ सब। पुरउब छोडि विवेक ॥
पंचवटी गवने जबै। राम रूप की खान ॥
लखि मोही तहँ भीलनी। सोउ गोपी वर जान ॥
हति बाली सुग्रीव मिलि। रावण राक्षस मारि ॥
अवध नगर सीता सहित। पुष्प यान पग धार ॥
त्याग जानकी कीन पुनि। यज्ञ जबै जब कीन ॥
स्वर्ण मूर्त्ति सीता सबै। रामरमन रति भीन ॥
राम चंद्र तिनसबन को। द्वापर जन्म बताय ॥
कृष्ण चंद्र अवतार मम। ह्वै गोपी सुख छाय ॥
पूर्ण। मनोरथ करब तब। मख सीता सुनि लेहु ॥
राम चंद्र यक पत्नि व्रत। योग्य न अवै सनेहु ॥

सवैया

वैकुंठ कि वासिनि वाम रमा । अरु श्वेतद्वीप सखी जन सोऊ ।।
पद आश्रिता श्रीभगवान अजित् । वैकुंठ सुऊर्द्धहुँ की सब कोऊ ।।
लोका चल वासिनि दिव्य कोऊ । लक्ष्मीकि सखी उपजैं बृजसोऊ ।।
कर्ता त्रिगुणी कृति वृत्ति कोऊ । सत्कृत्तिकर्म युत कोरतिजोऊ ।।

दोहा

यज्ञ वतार अधिप स्वर्ग । रुचि सुपुत्र गुन खान ।।
देवसुता मोहित निरखि । गोपी सोऊ जान ।।
धन्वन्तरि अवतार में । औषधियहुँ तप कीन ।।
श्रीहरि से बर्दान लै । लता रूप बृज कीन ।।
बृन्दा वन सुघरी लता । रासमै वपु धार ।।
कृष्ण रूप में छकि सबै । पइहैं अवशि विहार ।।

छंद गीतिका

श्री जलंधर ग्राम की वृन्दा पती भगवान से ।।
मोहित भई संयोग हित आसा चरण सुख दान से ।।१।।
आकाश वाणी तब भई लक्ष्मी पती दृढ़ ध्यान से ।।
बृन्दा सहस बृन्दा विपित मे ह्वै रमोगी श्याम से ।।२।।
मत्स्य प्रभु को देखिके सामुद्र दुहिता चाह से ।।
वर पाय सोऊ रूप गोपी बृज प्रगट पद मान से ।।३।।
पृथु रूप मेरा प्रभा कृत बर्हिसमती तिय दान से ।।
मोहित सर्व लखि दीन इच्छित गोपिका वर मान से ।।४

गन्ध मादन गिरि अप्सरा मोह कृत्त भगवान से ॥
रूप नारायण निरखि सोउ गोपिका हित ठान से ॥५॥
देखि वामन सुवल नारी छवि छकीं रति भान से ॥
गोपियाँ ह्वै मुद लहेंगी ,प्रेम पद दृढ़ ध्यान से ॥६॥
अहि सुता लखि शेष शोभा रमन हितचित मान से ॥
बृज भईं गोपी सोऊ यह यूथ कीर्ति सुगान से ॥७॥

॥ दोहा ॥

कश्यप पितु वसुदेव ह्वै । अदिति देवकी माय ॥
प्राण नाम वसु सूर सो । देवक ध्रुव सुख दाय ॥
वसु नामक वसु होयगे । उद्धव ज्ञान गभीर ॥
होय जन्म अक्रूर को । दक्ष वर्ग यदुवीर ॥

॥ सवैया ॥

अवतार हृदीक कुवेर वरुण । कृतवर्मा नाम सुनो विधि राई ॥
गद प्राची बर्हि सुजन्म धरे । मरुतन नृप उग्रसुसेन कहाई ॥
युयुधान महीपति अंबरीष । जनमी प्रहलाद सात्यकी भाई ॥
सर क्षीर सुसंतनु रूपधरी । वसुद्रोण भीष्मजी कीरति छाई ।

॥ कवित्त ॥

नृपशाल्व दिवोदास केर अवतार होय ।
धृतराष्ट्र भग सूर्य पूषा पाण्डु जानिये ॥१॥
धर्म युधिष्ठिर पवन प्रबल भीमसेन ।
स्वायम्भू मनु वीर अरजुन को मानिये ॥२॥

सूर्य करण रानी सतरूपा सुभद्रा होय।
अश्वनी कुमारनकुल सहदेव जानियं ॥३॥
धाता वह्लीक अग्नि द्रोणाचार्य अमित तेज।
कलि दुर्योधन प्रचंड जनम मानियं ॥४॥

॥ दोहा ॥

अंश चंद्रमा जानियें। अभिमन्यू रण धीर॥
शिव अश्वत्थामा जनम। होइ हैं महि बलवीर॥
भय प्रथम अवतार मम। ते पत्नी सब जाय॥
रमा अंश गोपी जनम्। खट दस सहस सोहाय॥
कालनेमिहै क्रूरमति। कंसा सुर अवतार॥
सोवधकर श्रीकृष्णके। जन्म हरन भू भार॥
ब्रह्मा से अस कहि प्रभू। योग वती समझाय॥
गर्भ सातवाँ शेष है। देवकि के जब जाय॥
भार्या श्रीवसुदेव की। त्रास कंस नँद धाम॥
आकर्षण करि रोहिणी। गर्भ धरयो बलराम॥
नंद राजपत्नी सुघर। नाम यशोदा जान॥
योगवती तुम ता सुता। होइहो आज्ञा मान॥
भगवत श्रीहरि वचन सुनि। ब्रह्मा शीश नवाय॥
देव गनन युत लोक निज। गवने आज्ञा पाय॥
त्रिभुवन पति जगदीश जग। जन्म लीन सत हेत॥
मथुरासे गोकुल प्रविसि। लीला जन हित चेत॥
आनँद कंद मुकुंद प्रभु। नँद नंदन शिर ताज॥

ब्रजमंडल सोहत सहित। बालन ग्वाल समाज ॥
नाम करन प्रभु का करन। गर्ग मुनी नँद गाम ॥
प्रेरे श्रीवसुदेव के। गमन छिप्र शुभ काम ॥
नँद राय सनमान दै। सुचि आसन बैठाय ॥
नाम करन हित लाल के। विनै कीन हरषाय ॥

॥ कवित्त ॥

नंद हे वचन सुनो गर्ग जी कहत हर्षि ॥
धन्य तुम हो परन्तु छिप्रही बताइ हों ॥१॥
कंस नृप अतिहीं उपद्रव मचाय रह्यो ॥
यदुन आचार्य ताहि भ्रमना देवाइ हों ॥२॥
करत प्रकाश नाम ताते भय होत हमे ॥
तर्क न उठेगी जू तुम्हार हेत लाइ हों ॥३॥
चलिये एकान्त गोद लालन यशोदा युत ॥
तब तो अनंद कंद नाम कीर्ति गाइहों ॥४॥

॥ दोहा ॥

गर्ग मुनी के बैन सुनि। नंद राज युत नार ॥
रामश्याम दोउ लाल लै। खिरक धेनु पग धार ॥
यथा उचित ग्रह देवतन। पूजि हर्ष युत नंद ॥
पुत्रगोद मन मोद अति। नाम करन सुख चंद ॥
अति प्रसन्न मुनि गर्ग जी। बोले उचित विचार ॥
हृदय रमन योगीन के। श्रीरोहिणी कुमार ॥
सर्व रमे ताहेत है। नाम राम सुख धाम ॥

आकर्षण विधिसे भये। संकर्षण वल राम ॥
अंत शेष जोई रहै। सोई शेष बखान ॥
शेष नाम है राम हूँ। महा पराक्रम वान ॥

॥ छंद मनोहरा ॥

सुनिये सुतनामा, जनमुदकामा, जगविश्रामा।
सतकामा, जन पद धामा ॥ १ ॥
काकमला कन्ता, श्रीभगवन्ता, नाहिन अंता।
सुखवंता, गति शुभ संता ॥ २ ॥
ऋ अर्थ सोरामा, पूरण कामा, शोभा धामा।
अभिरामा, छविहद कामा ॥ ३ ॥
षा श्वेतदीपा, वास सुदीपा, खटसुख लीपा।
जगदीपा, त्रिभुवन धीपा ॥ ४ ॥
है वास अनूपा, मुक्ति अनूपा, महिमा कूपा।
अनुरूपा, हित सत रूपा ॥ ५ ॥
णानर सिंह पावन, चरितसोहावन,।
जगसुख छावन, मनभावन गुन जन गावन ॥ ६ ॥
भुक् अग्नि अकारा, विसर्ग धारा, नामपुकारा।
नारायण, नर सुख दायन ॥ ७ ॥
षटसब्द सोहाई, पूरण ताई, कृष्णकहाई।
परमेश्वर, हैं शर्वेश्वर ॥ ८ ॥
रंगश्वेत व लाला, पीत विशाला, त्रैयुग पाला।
अबकाला, द्वापर वाला ॥ ९ ॥

गत द्वापर आये, कलि प्रविसाये,
कृष्ण कहाये, नँद नंदा, आनँद कंदा ॥१०॥
श्रीकृष्ण सुनामा, दुतिय ललामा,
शोभा धामा वासुदेव इन्द्रियन देव ॥११॥
श्रीकीर्ति कुमारी, पति गिरधारी,
जग हित कारी, जनतारी, महिमा भारी ॥१२॥
प्रभु राधा रमनं, जग दुख हरनं,
असरण शरनं, मुद भरनं, आश्रित चरनं ॥१३॥
साक्षात मुरारी, त्रिगुण पसारी,
अखिल विहारी, पुरुषोत्तम, तव पुत्रोत्तम ॥१४॥
गोलोक सुनाथा, अद्भुत गाथा,
सब एक साथा, गान करे, विधि वेद हरे ॥१५॥
त्रिभुवन के कर्ता, राधा भर्ता,
अघ जग हर्ता, कीर्ति तरी, प्रभु चर्ण वरी ॥१६॥

॥ दोहा ॥

कंस आदिकन खल नृपन । वध वसुधा उद्धार ॥
हेत जन्म श्रीकृष्ण जन । पूत नंद हित कार ॥
हैं अनंत नहिं अंत है । वेद भेद नहिं पाय ॥
जोइ जोइ करत चरित्र हरी । सोइ सोइ नाम सोहाय ॥
कर्म अपूर्व सुपुत्र के । देखि अचंभौ त्याग ॥
धन्य भाग्य गुनि नंद जी । कृष्ण लाल अनुराग ॥

आनँद जल बरषाय दृग। मुनि पद परस्यौं शीश ॥
नंद यशोदा धन्य भे। जानिं पुत्र जगदीश ॥
गर्ग मुनी प्रभु दर्श करि। हर्ष मान पग धार ॥
सनमानित ह्वै नंद से। गे बृषभान अगार ॥
नृग सुत नाम सुचंद भे। सर्व नृपन शिर मौर ॥
भाग्य वान हरि अंश सो। यस व्याप्यो सब ठौर ॥
पितरन को त्रै पुत्रियाँ। कलावती छवि खान ॥
तथा रत्नमाला सुछबि। और मैनका मान ॥

॥ सवैया ॥

कन्यासु कलावति व्याहि गई। हरि अंश सुचंद्रहि को गुन खानी ॥
रत्नमाला विवाह विदेह नरेश। सुमेनका व्याह हिमालय जानी ॥
रत्नमाला जानकी मात भई। गिरजा कर जन्म मेनका मानी ॥
राधाजन्मी त्यों कलावति से। पर संज्ञक तेज कीर्ति विभु जानी ॥

॥ दोहा ॥

दिव्यवर्ष द्वादस कियो। तप विधि नृपति सुचंद ॥
कलावती सँग मोक्षहित। लह्यो महा आनंद ॥
ह्वै प्रत्यक्ष ब्रह्मा कह्या। माँग नृपति बरदान ॥
मोक्ष कांक्षा विनै सुनि। रानी मन नहि मान ॥
पति वियोग गुनि के कहत। हे ब्रह्मा मति मान ॥
पति पत्नी कर सर्व सुख। ताते मम तन हान ॥
मोक्ष पती को देहु जों। आप देव विधि आज ॥
विना पती जीवन बृथा। ताते सारहु काज ॥

बोले विधिवर झूठ नहिं । श्राप शंक मन मान ॥
ताते पति युत कलावति । स्वर्ग सुक्ख हितमान ॥
भोगि स्वर्ग सुख अन्त मे । द्वापर यस विस्तार ॥
गंगा यमुना मध्यमे । दम्पति जन्म तुम्हार ॥
सिरीकृष्ण परि पूर्ण तम । शाक्षात अवतार ॥
तिनकी प्रिय श्रीराधिका । दुहिता होय तुम्हार ॥
तवै मुक्ति तुम लहहुगे । कहि विधि गे अस्थान ॥
कलावती कीरति भई । भेसुचंद्र वृषभान ॥
देशकनौज भलंद नृप । पुत्री कीर्ति सुजान ॥
यज्ञ कुंडसे प्रगट भै । ज्ञान पून्न कुल जान ॥
भेसुचंद्र सुरभान से । नाम सुघर वृषभान ॥
गोपनमें सो श्रेष्ठ हैं । रूप मदन छविवान ॥
पूर्व जन्म की सुधि रही । बुद्धि मान वृषभान ॥
कलावती आख्यान सुनि । होय पाप की हान ॥
शुभ सम्बन्ध कराय दिये । नंद राज वृषभान ॥
कीर्ति सुघर पत्नी लहे । दम्पति सुख अधिकान ॥
नंद राज वृषभान धनि । शुमिरत पाप नसान ॥
जन्म राधिका कृष्ण तिन । ताते पूज्य महान ॥
भाद्र शुक्ल शुभ अष्टमी । वार सोम मध्यान ॥
जन्म लीन श्री राधिका । कृष्ण प्रिया छवि खान ॥
महरानी गोलोक की । श्रीवृषभान अगार ॥
मंगल मूरति जनन गति । देन हेत अवतार ॥

दिसा प्रफुल्लित पवनगति । मन्द मन्द सर साथ ॥
भानुनगर आनंद अति । नभ जै जैति सुनाय ॥
वर्षे देव प्रसून कल । गान किन्नरी कीन ॥
कृष्ण प्रिया जग स्वामिनी । जन्मि जगत सुख दीन ॥

॥ सवैया ॥

यमुना तट मंदिर श्रेष्ठ महा । वृषभान अगार सुगर्ग निहारो ॥
वृषभानहुँ देखि मुनीश बड़े । उठि कीन प्रणाम दृगौ जल ढारो ॥
गरूये गर भाग्य सराहि निजै । दुहिता हित मंगल काज विचारो ॥
हे गर्ग मुनी राधा ग्रह दोष । बताय के कीर्ति अनिष्ट निवारो ॥

॥ सवैया ॥

तम दूर करे जस सूर्य प्रकाश । तसै तव भास हृदय उजियारो ॥
सुचि तीर्थनहूँ को जु साधु करे । हमरे हित कारण आप सिधारो ॥
वर राधिका योग्य अनूप कहो । केहि देहि सुता जग को गुन बारो ॥
गति जाननवार सबै मुनि हो । कीरति हितकार उपाय विचारो ॥

॥ दोहा ॥

मंद विहँसि कर पकड़ि तब । गर्ग मुनीश्वर राज ॥
लै यकान्त वृषभान को । कह्र सुन गोपन राज ॥

॥ कवित्त ॥

गुप्त बात भाषत बतायहु नहिं काहू से ।
साक्षात कृष्ण परिपूरन तम ईश है ॥ १ ॥
गोलोक स्वामी अखिल लोकन परेश विभो ।
दूजा वर और राधा योग्य नहिं दीश है ॥ २ ॥

नंदराज पुत्र कृष्ण राधापति युग युगै।
कौतुक निधान ऐसे त्रिभुवन धीश है ॥ ३ ॥
ताते मानि भाग्य धन्य चरण संबंध करहु।
कीर्ति पति योगन जामात जगदीश है ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

हर्षि कहत वृषभानजी। अहो भाग्य नँदराज ॥
कृष्ण जन्म कारण कहहु। महूँ धन्य हूँ आज ॥

॥ कवित्त ॥

अघ महि टारिवे कूं कंस आदि दुष्टन के।
बध हेत जन्म कृष्णचंद्रजू का जानिये ॥१॥
पाट रानी राधा गोलोक धाम वासिनि भयी।
दुहिता तुम्हार विधि प्रार्थना सो मानिये ॥२॥
वृषभान ह्वै प्रसन्न कलावति बोलिढिग।
करत विचार राधाकृष्ण हेत चाहिये ॥३॥
पूछत बहोरि गर्ग जी से सुभाग्य गुनत।
आपही विवाह कीर्ति कार्य शुभ ठानिये ॥४॥

॥ दोहा ॥

गर्ग कहत यह व्याह है। सुलभ नहीं वृषभान ॥
वन भांडीर विपिन सुखद। व्याहि हैं विधि कृतिं ठान ॥

॥ सवैया ॥

राधा श्रीकृष्ण विवाह करे। विधि वन भांडीर सुहर्ष बढ़ाई ॥
तट सोह कलिंदी सुयाम शुभै। मिलिहैं दुहिता पति कृष्णकन्हाई ॥

अर्द्धांगिनि राधा सदा हरिकी । चूड़ामणि तू नृपमे छवि छाई ।।
इच्छा प्रभु की पुत्री तव है । युत मंडल गोप कीर्ति इत आई ।।

॥ दोहा ॥

दुर्लभ राधा दर्श है । यज्ञ योग सुर काहि ।।
साक्षात् तव गृह बसी । हो तुम धनि महि माहि ।।
विनै कीन फिर गर्ग से । हर्ष मान वृषभान ।।
व्याख्या राधा शब्दकी । करहु तत्व युत गान ।।

॥ छन्द गीतिका ॥

गंधमादन गिरि बसे नारायण पर भगवान है ।।
भावार्थ वेद सुसाम स्वयम कहा सुना हम कौन है ।।१।।
सोई सुनाऊ आज तोकू सुन धारि धिया ध्यान है ।।
रमा अर्थ रकार गोपी हूँ ककार बखान है ।।२।।
धरा अर्थ धकार विरजा हूँ अकार नुमान है ।।
परम कृष्ण सुतेज ताके चार रूप देखान है ।।३।।
लीला रमा विरजा तथा भूदेवि वेद सुछान है ।।
है चार रूप सु चार देवी कृष्ण माया मान है ।।४।।
कृष्ण राधा रूप अदभुत सर्व जीवन प्रान है ।।
युग युग प्रधान सुशक्तियाँ कीरति बढ़ावन वान है ।।५।।

॥ दोहा ॥

चारहु मिलि एकै भई । राधा नाम अनूप ।
कृष्ण चरण गति मति अचल । बचन वेद अनुरूप ।।

॥ कवित्त ॥

गोप वर वृषभान राधाकृष्ण नाम जाप।
उत्ताम प्रताप अर्थ-धर्म कामवान है॥ १ ॥
दुर्लभ नहीं है मोक्ष हूँ नामगान भनत।
करतो जो चाह जात मिलि भगवान है॥ २ ॥
सुनि गोप राज युत नारी आनंद मँगन।
गर्ग पद शिर-धारि धन्य निज मान है॥ ३ ॥
पूजन अनेक भाँति पाय सनमान युत।
मुनीजी पयान कीन कीर्ति प्रभु ध्यान है॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

राधाकृष्ण विहार नित। वृन्दा वन सुस्थान॥
नंद यशोदा कीर्ति युत। लहत मोद वृषभान॥
एक समै श्रीनंदजी। पुत्र कृष्ण लिये गोद॥
गोचारन भांडीर वन। गवने अति मन मोद॥
तीर कलिंदी पवन गति। मंद सुखद सरसाय।
लालन की शोभा निरखि। नंद महर बलि जाय॥

॥ छन्द नाराच ॥

लला को गोद लै चले सुमंद चाल भावनी।
कपोल चुंबि नंद कृष्ण चंद्र छबि सोहावनी॥ १ ॥
न जान सके शेष शिव विरंचि वेद भेद को।
स्वतंत्र नाथ नंद गोद कौतुकी अभेद को॥ २ ॥
प्रचंड पौन ह्वै गई घमंड घेर धूर को।

उमेड मेघ छै गये उखेर द्रुम खजूर को ॥ ३ ॥
तरंग ह्वै गईं विरंग पात खर खरान है।
बडेर प्रेरना-विचित्र दृग नहीं देखान है ॥ ४ ॥
चमंक दामिनी महान मेघ गडगडान है।
हृदय लगाय पुत्र नंद शोच अति समान है ॥५॥
डराय कृष्णलाल बाल रोय छटपटान है।
अधीर नंदराज विघ्न फेर कछू मान है ॥ ६ ॥
सम्हाल पुत्र नासके नहीं कछू शुझान है।
कहाकरें नजानि परे ह्वै रही गलान है ॥ ७ ॥
परेश श्रीरमेश शरण नंद चित्त ठान है।
प्रकाश-कोटि चंद्र सदृश नंद को देखान है ॥ ८ ॥
नौ नंदराज देखि दीप्ति राधिका प्रकाश की।
प्रसन्न नंद जै कही मया जगंनिवास की ॥ ९ ॥
सजे सुअंग वस्त्र भले रत्नमणि किनार के।
अमोल रत्न भूषणौ सुअंग सर्व धार के ॥१०॥
गयंद चाल माधुरी चितै पती मुकुंद को।
अनंद मग्न ह्वै रही विलोकि हर्ष नंद को ॥११॥
विनै सुनाय नंदराय राधिका सुजान से।
परेश कृष्ण देवि तुही शक्ति सत्यमान से ॥१२॥
नवीन बात है नहीं सदा प्रिया हो कृष्णकी।
पुरुष पुरान आदि देव भुक्ति मुक्ति कृष्ण की ॥१३॥

ताहेत राधिके सयान प्राणपती कृष्ण को।
अपूर्व नाट्य हार गोद मोर सू ले कृष्णको ॥१४॥
दयामई तुलाल थाम्ह पौन मेघ भीत से।
हमार धाम जाय तूँ दे आव मात हीत से ॥१५॥
अनिष्ट टार राधिके समर्थ सर्व शक्तिकी।
अनेक विघ्न होत कर पमार वार भक्ति की ॥१६॥
लगाय अंक जाहु यशोदा समीप आतुरी।
यही तो प्रार्थना हमार मान कीर्ति चातुरी ॥१७॥
तुराय लीन राधिके गोविन्द प्राणनाथ को।
नवाय चर्ण शीश ह्वै अनंद कंद साथ को ॥१८॥

॥ दोहा ॥

कहि तथास्तु श्री राधिके। गोद कृष्ण पति लीन॥
वन भांडीर गई सुखित। भक्ति नंद को दीन॥

॥ सवैया ॥

गोलोक मही बपु आपन भै। मणि भाँति अनेक जड़ी जगती॥
ह्वै स्वर्ण भूमि गई कुंज तथा। बृन्दावन बृत्त लता लहती॥
मणि कंचन मंदिर कालिंदी। सीढी मणि माणिक मै छजती॥
यहि भाँति गोवर्धन रत्न शिला। झरना द्रुम कीर्ति झरै सगती॥

॥ दोहा ॥

यहि विधि कुंज निकुंज सब। निज स्वरूप धरि लीन॥
रत्न जड़ित मंदिर महल। रितु बसंत रँग भीन॥

यथा तथा गोलोक विधि । पूर्ण सर्व व्यवहार—।
ध्वजा पताका फबि रहे । पदिन सोर विहार ॥

॥ कवित्त ॥

साज अनमोल व्याज संतन सुखद मूल ॥
कृष्ण भगवान व्याह फल निरवान के ॥१॥
मंडप जवाहिर जड़ाव फर्स कंचन को ॥
पद्मराग ऐन मणि आदि शुभ खान के ॥२॥
साक्षात रूप बाल कृष्ण नव किशोर भये ॥
सुन्दर सलोने वस्त्र पीत जग भान के ॥३॥
प्रति अंग भूषण सिंगार मद गंज मैन ॥
मौर मुकुट बंशी कीर्ति हैं पद गान के ॥४॥

॥ कवित्त ॥

हास्य मंद माधुरी विलोकि प्रिय कर गहें ॥
मंडप विवाह के सिंहासनपधारे हैं ॥१॥
चौक पंच पल्लव कलश खम्भ कदली के ॥
मोतिन की झालरे चँदोवा चंद्रवारे हैं ॥२॥
दूलह श्रीकृष्ण राधा दुलही त्रिलोक धन ॥
उपमा लोभानी दोऊ संतन पियारे हैं ॥३॥
घनश्याम दामिनि सुदम्पति प्रकाशि रहे ॥
स्वजन प्रमोद पद कीर्ति हितकारे हैं ॥४॥

॥ दोहा ॥

ताही क्षण आकाश से । आये विधि हर्षाय ॥
युगुल चरण बंदन किये । नाय शीश गुन गाय ॥

॥ छन्द गीतिका ॥

जै अखिल पति परमात्मा श्रीकृष्ण पुरुष पुरान की ॥
राधारमण बाधा हरन जन भक्त वत्सल बान की ॥१॥
गोलोकधीश्वर देवि लीला पति अनूप सुजानकी ॥
युग युग विहार अपार राधा संग वेद बखान की ॥२॥
बैकुंठ पति नरसिंह हरि श्रीराम नाम समान की ॥
अवतार नारायण यज्ञ वपु ब्रह्म काल महान की ॥३॥
राधा लक्ष्मी जानकी अरुलया दक्षिणा ज्ञान की ॥
शांती ह्रदी अरु है तटस्था जन्म कृति युग ठान की ॥४॥
वृषभानुजा शक्ती सर्वदा नाथ माया मान की ॥
ब्रह्मा कहत हे कीर्ति जीवन ब्याह युग फलदान की ॥५॥

॥ दोहा ॥

जगत सृजक जब होहु हरि । सगुण राधा माय ॥
अन्तरात्मा आय जब । लक्षण रूप देखाय ॥
हो बिराट जब भूमिमै । अखिल पती बिशुनाथ ॥
पृथ्वी तब राधा बनै । सदा शक्ति यह साथ ॥

॥ कवित्त ॥

तेज श्याम गौर दोऊ एक साक्षात दरश ॥
ब्रह्मा के ईश धाम गोपुर प्रभु स्वामी हो ॥१॥
उत्तम पुरुषोत्तम परेश त्रैलोक्य मणि- ॥
श्रीचरण प्राप्तो हमार गरुड गामी हो ॥२॥
युगुल अस्तोत्र सर्वोत्कृष्ट दूर करत ॥
लोक यहि पूर्ण वृद्धि स्वाभाविक नामी हो ॥३॥
उत्तम गोलोकवास महानँद पद प्रेम— ॥
कीर्ति दीनानाथ व्याह गान हेत कामी हो ॥४॥

॥ दोहा ॥

अग्नि कुंड प्रज्वलित करि । विधि विधान विधि कीन ॥
हित विवाह कर जोरि कह । युगुल प्रेम पद भीन ॥
स्त्री पुरुष यक हो दोऊ । प्रीति युक्त युग याम ॥
संग्रह जग व्यवहार हित । स्वीकारहु सुख धाम ॥
पाणी ग्रहण कराय पुनि । अग्नि प्रदक्षिणा कीन ॥
अर्द्धंगी श्री राधिका । कृष्ण पती पद लीन ॥
सात मंत्र विधि से पढ़े । कृष्ण सुजान अनंत ॥
करि प्रणाम त्रिभुवन धनी । व्याह हर्ष जग संत ॥

॥ सवैया ॥

श्री कृष्णपती उर हाँथ धरे । श्रीराधा हरी प्रिय के सुखकारी ॥
फिर पीठ धरे कर हर्ष भरे । मनभावन राधिका के हितकारी ॥

पद्धति युत मंत्र, विवाह पढ़े। कर राधिकामाल सुगंध सवांरी ॥
पहिराय प्रभू को मनैं हर्षी। हरि माल प्रिया गर कीर्ति जो हारी ॥

॥ दोहा ॥

उत्तम सिंहासन दोउन। बैठाये विधि राय ॥
मौन राधिका कृष्ण व्रत। धारे कृत्ति सोहाय ॥
मंत्र पाँच फिर नाथ को। दीन पढाय सहर्षि ॥
सुता समान समर्पि विधि। बृष्टि सुमन सुर हर्षि ॥
नभ जै जै गुंजार भो। विद्याधरी सु आदि ॥
नाचन लागी मुदित मन। नभ सुर युत अच्छादि ॥
मंगल राधा कृष्ण का। बारम्बार मनाय—॥
दुंदुभि दै जै जै कहत। आनँद वर सुखदाय ॥
ब्याह कृत्ति संपूर्ण करि। ब्रह्मा कीन प्रणाम ॥
बांछित वर कहि दक्षिणा। श्रीवर राधेश्याम ॥
चरण भक्ति विधि माँगि दृढ़। पदपद्मन शिर नाय ॥
कहिं तथास्तु राधापती। करुणा जन सर साय ॥
ब्याह मंगलाचार करि। गे बिरंचि अस्थान—॥
देव गये निज निज सदन। कीर्ति ध्यान पद गान ॥

॥ छन्दतोमर ॥

मंदिर निकुंजनि माह। खट रस सु व्यंजन काँहि ॥१॥
साजे सरस फल चार। भरि रत्न कंचन थार ॥

सो कृष्ण राधा वाम। भोजन किया मन काम ॥
व्यवहार अँतरवपान। अरगजा माल सोहान ॥
दोऊ दोहुँन सतकारि। छबि परस्पर मन हारि ॥
धरि भुज प्रिया छबि हेर। बृन्दा विपिन गे फेरि ॥
यमुना सुखित तट घेर। छबि कहत प्रिय मुख हेर ॥
बरणत विपिन छवि श्याम। सोहत संग प्रिय वाम ॥
दम्पति सु शोभा भ्राज। विहरत ललन दुरि आज ॥
खेलत दोऊ मन काम। राधा कृष्ण छबि धाम ॥
कहुँ डारि कर गल माँहि। गति मन्द उपमा नाहि ॥
रमि राधिका सँग श्याम। एकान्त पूरण काम ॥
बृन्दा विपिन छवि खान। राधा रमण भगवान ॥
पति चरण सेवा पाय। प्रिया हर्ष नाहि समाय ॥
पूरण मनोरथ पाय। पद पद्म उर निवसाय ॥
त्रैलोक्य ईश्वर नार। राधा सु भाग्य अपार ॥
फिरि गिरि गोवर्धन जाय। प्रिय संग रास मचाय ॥
यमुना पुलिन पुनि आय। विहरत त्रिलोकी राय ॥
दल लक्ष पद्म अनूप। छीन्यो त्रिलोकी भूप ॥
छिपयो यमुन जल श्याम। विहँसी राधिका वाम ॥
वंशी लकुट पट लीन। लीला परस्पर कीन ॥
माँगत रसिक वर श्याम। हँसि कंज मागत वाम ॥
सब दीन प्रिय मुस्क्याय। हरि कंज दै हर्षाय ॥
दोऊ दोहुँन रँग भीन। कौतुक निधान प्रवीन ॥

करि राधिका शृंगार। अद्भुत मनोज बहार॥
प्रिय पति शृंगार न काज। लैकर सु उत्तम साज॥
मनमुदित प्रियतम हेर। शृंगार हित हरि केर॥
उद्यत राधिका जान। शृंगार करन सुजान॥
श्रीकृष्ण शिशु बपु कीन। रोदन मनोहर कीन॥
पति देखि शिशु तेहि काल। रोदति प्रिया बेहाल॥
हे नाथ माया धीश। माया हरहु जगदीश॥
अस करत प्रिया पुकार। बिन नाथ कष्ट अपार॥
राधा विकल बिलखाय। प्रभु कीर्ति के गुन गाय॥

॥ दोहा ॥

गगन गिरा तब होत भै—। हे राधे धरु धीर—॥
पूर्ण मनोरथ करब तव कुंज कलिंदी तीर।
समझि गगन बाणी प्रिया। अंक उठाय गोपाल॥
नंद भवन आवत भई। गोप्य रहस्य विशाल॥
दीन यशोदा गोद में। कृष्ण पती सुखदान॥
कह्यो नंद मग में दियो। मेघ उपद्रव जान॥

॥ सवैया ॥

उरलाय कपोलन चूमि लला को। सराहि लली गुनि भाग्य महाई॥
उतपात निबारि बचाय सुतै। मम हेत करी वृषभान की जाई॥
तुम एक दोऊ श्रीकृष्णमयी। प्रिय राधिके गर्ग कही समझाई॥
बिनसाय अरिष्ट हमार महान। कृपा करि कीरति के प्रभु लाई॥

॥ दोहा ॥

ह्वै प्रसन्न आशीश दै। सिरी यशोदा माय ॥
चलीं मुदित मन राधिका करि प्रणाम मुसक्याय ॥
अनुपम लीला ललित नित। कृष्ण चंद्र बृजराज ॥
राधा संग विहार शुभ। करत संत कृत काज ॥
हाट बाट गिरि कुंज बन। बंशीवट सुख साज ॥
मिलत कृष्ण राधा मुदित। गोपी गनन समाज ॥
बिछुड़न दुख सहि जात नहिं। प्रिया विकल ह्वै जात ॥
विना दर्श पल युग सदृश। मरण कष्ट दरसात ॥
विकल प्रिया लखि कहत अस। ललिता सखी सुजान ॥
त्रिभुवन पति वर कृष्ण लहि। फिर कस बदन मलान ॥
कहत राधिका हे सखी। विना मिले भगवान— ॥
क्षण हूँ तो कल ना पड़े। गुप्त रहस्य प्रधान ॥

॥ सवैया ॥

ललिता सुन बात हृदय कि मेरे। ब्रत तौन बताव जु मोद बढ़ाऊँ ॥
मुनि गर्ग कृते जोतु ज्ञान सुन्यो। वह मोहि बताव महूँ सुख पाऊँ ॥
प्रिय बैन सुनी चतुरी चंद्रानन। बोलि उठी तब कष्ट नसाऊँ ॥
वर दायिनि मुख्य सिरी तुलसी। तुलसी पद पाय सुकीर्ति बनाऊँ ॥

॥ छंद गीतिका ॥

ध्यान जप तप दर्श पर्शन निष्ट तुलसी नाम को ॥
स्तवन कीर्तन ब्रत व पूजन करि लहत मन काम को ॥१॥

सिंचन लगावन भक्ति नौधा हेत कृत गुनमान को ॥
कल्याण कारिनि सर्वदा युग सहस लहि निरवान को ॥२॥
शाखा प्रशाखा वृक्ष तुलसी पुष्य दल युत दान को— ॥
वंश तिन अति मोक्ष भागी युगन सुख शुभ ठान को ॥३॥
फल सर्व पत्र सुपुष्प अर्पण होत जो सुख ज्ञान को ॥
वह एक अर्पे पत्र तुलसी कोटि फल निर्वान को ॥४॥
शुभ अर्पि तुलसी पत्र श्री गोविन्द कृष्ण सुजान को ॥
वह पातकी हूँ मुक्त है तुलसी प्रिया भगवान को ॥५॥
चाँदी चार सौ भार कंचन भार सौ हित दान को ॥
पालक विपिन तुलसी सदृश नहि लहत गति सुखदानको ॥६॥
गृह वृक्ष तुलसी जिन रहे वह तीर्थ सर्व सुमान को ॥
यम भीति हारी नाम तुलसी कीर्ति लहि गुन गान को ॥७॥

॥ दोहा ॥

अघ हारी वृन्दा विपिन। देन कामना हार ॥
छुये लगाये सींचने। दर्श पर्श भव पार ॥
काइक वाचिक मानसिक। पाप होत जरि छार ॥
पुष्कर गंगा विष्णु सुर। तुलसी रमे मुरार ॥

॥ छंद त्रिभंगी ॥

प्रियहरि की तुलसी, जनपद हुलसी, भव की पुलसी, भ्रमहारी ॥
तुलसी कर चंदन, धरि तजि बंधन, यम गति भंजन, जगतारी ॥

तुलसी जहँ छाया, श्राद्ध कराया, पितृ तराया, यस भारी ॥
तुलसी माहातम, विधि नहिं ज्ञातम, नाम सुख्यातम, जैकारी ॥
हे राधारानी, परम सु जानी, व्रत निरमानी, पद धारी ॥
तुलसी व्रत कीजे, आनँद लीजे, हरि रँग भीजे पति प्यारी ॥
व्रत नित्य सुधारी, चर्ण अधारी, कृष्ण विहारी, हितकारी ॥
तुलसी की सेवा करि मुद लेवा देवन देवा गिरधारी ॥
हित चित्त उपासी, तप मुदरासी, व्रत जग भासी, हितकारी ॥
करु कीर्ति सुखीता, व्रत सत जीता, तुलसी गीता, भवहारी ॥

॥ दोहा ॥

रास ईश्वरी राधिका। हर्षि उठी व्रत काज ॥
कृष्ण पती पर सन्नहित। बैन सखी कृत काज ॥
अर्चन हित प्रस्तुत प्रिया। हृदय न हर्ष समात ॥
प्रियतम कृष्ण कृपाल हित। उमँगि उठे सब गात ॥
व्रत आरंभ सुलग्न करि। शुभ मंदिर निरमान ॥
मणि माणिक्यन युक्त शुचि। श्री तुलसी अस्थान ॥

॥ कवित्त ॥

हाँथ सत ऊच वन केतकी मे गोल शुभ ॥
जड़ित किनार पुखराज स्वर्ण भीती है ॥१॥

पन्ना मणि हीरा जड़ाऊ पर कोटा सुघर ॥
चिंतामणि वीथी परिक्रमा सूप छीती है ॥२॥
बंदनवार मुक्तन की तोरण पताका हूँ ॥
वैजयंत स्वर्ण चंदोवा सगुन रीती है ॥३॥
मोहत सुरेन्द्र भौन तुलसी अनूप छवि ॥
हरे हरे पत्तनसो युक्त कीर्ति हीती है ॥४॥

॥ छंद गीतिका ॥

अभिजित नक्षत्र सुसेव करि प्रारंभ राधा हरि प्रिया ॥
पधराय तुलसी मुदलही मुनि गर्ग पूजन कृति किया ॥१॥
पूर्णिमा शुभशरदकी प्रीत्यर्थ कृष्ण जु विधि किया ॥
चैत पूनो तक महा तुलसी अराधन व्रत किया ॥२॥
कार्तिक सुसिंचन क्षीर अगहन ईख रस सिंचन किया ॥
किसमिस सरस रस पूष सिंचन आममाह सुखित किया ॥३॥
फाल्गुन सु रस मिश्री चैत्र पंचा अमृत नियमित किया ॥
वैशाख परिवा को क्रिया संपूर्ण उद्यापन किया ॥४॥
श्रीराधिका व्यंजन विविध रचवाय छप्पन है दिया ॥
द्वैलक्ष द्विज भोजन दक्षिणा वसन भूषण युत दिया ॥५॥
श्रीगर्ग मुनि को भार सहसन स्वर्ण मोती मणि दिया ॥

उत्तम विधान सु पूर्ण उद्यापन गगन सुर जै किया ॥६॥
वर्षाय पुष्प सुगंध नाची अप्सरा गुन गन किया ॥
बाजी दुंदभी गगन हर्षे सर्वसुर कहि हरि प्रिया ॥७॥
हे राधिके व्रत सुफल है श्रीकृष्ण पति पद हित किया ॥
जै जै तुम्हारी कीर्ति प्यारी अर्चि तुलसी जगजिया ॥८॥

॥ दोहा ॥

ताहीत्तण शशि कोटिसम, महा प्रकाश निहार ॥
श्री तुलसी प्रगटी सुघर, दर्श जनन हितकार ॥

॥ सवैया ॥

आसीन सिंहासन कंचन के भुज चार सोहावन चंद्रप्रभासी ॥१॥
दृगकंज किशोर सुवैन अभूषण, वस्त्र अमोल प्रभा चपलासी ॥२॥
शुभ चंद्रिका कुंडल कर्ण गले, मणि मुक्तन माल अपूर्व छटासी ॥३॥
तिरवेणी सुवेणी नसेनी स्वर्ग, तुलसी पद कीर्ति लही गतिखासी ॥४॥

॥ दोहा ॥

वाहन खगपति से उतरि। आईं राधा पास ॥
भुज भरि अंक लगायद्रुत। करि चुंवन मृदु हाँस ॥

॥ कवित्त ॥

तुलसी प्रसन्न वचन राधेते बोली अस ॥
वरमाँग राधेदैहों वांछना पुराव के ॥१॥

वसकीन भक्ति तव उपकार लोक हेत ॥
कीनब्रत सर्बतो सुजग हित लाय के ॥२॥
होई सर्ब पूरण मनोरथ हे भाग्यवती ॥
जगत जोहारी पद कृष्ण वर पाय के ॥३॥
सरबदा सोहाग बृषभानु जा तुम्हार है ॥
तुलसी अशीश गति कीर्ति गुनगाय के ॥४॥

॥ दोहा ॥

राधेचर्ण प्रणाम करि। विनयो तुलसी माय ॥
कृष्ण मुरारी चरणरति। दिन दिन हृदय समाय।
कहि तथास्तु तुलसी तहाँ। ह्वै गई अन्तर ध्यान ॥
चित प्रसन्न गई राधिका। युत समाज अस्थान ॥
तुलसी राधा चरित शुभ। सुनै जो ध्यान लगाय ॥
पढ़ै तरै निर्बान गति। लहै कीर्ति हर्षाय ॥

॥ सवैया ॥

यहिभाँति विहारअनेकन कृष्ण। करे जनहेत त्रिलोक गोसाई ॥
प्रिय राधिका जीवन सर्व हरी। सुख संपति दंपति मान बड़ाई ॥२
हति दैत्य अनेकन कंस समेत। विदारि नृपै मद धूरि मिलाई ॥३॥
रथ भारत हाकि विजै हितभू। गोलोक वसे जगकीर्ति सोहाई ॥४॥

॥ दोहा ॥

कीरति दाशी चरण की । प्रियतम कृष्ण सुजान ॥
आय निवाहो फिर प्रथा । जस जन पूर्वन मान ॥
क्षमा प्रदान प्रभू करहु । भूल चूक गुन गान ॥
चरण शरण आश्रित सदा । और नही कछु ज्ञान ॥
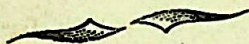
इति

श्री कीर्तिरमण गान समाप्तं

श्रीमन्दीनानाथार्पण मस्तु—

शुभम् भूयात

लेखिका
कीर्ति देवी
रीवा राज
मु० प्रयाग रीवा कोठी